कर्मन की गति न्यारी

श्रीमती अंजना शर्मा

एक बहुत बड़ा सेठ विपुल सम्पत्ति छोड़कर मरा। उसका एक मात्र पुत्र उस सम्पत्ति का मालिक था। धनी लोगों के पुत्र प्रायः दुराचारी हुआ करते हैं। इसी दोष के कारण सुमेरुपरिमित सम्पत्ति सेठ के पुत्र ने थोड़े दिनों में ही नष्ट कर दी। सम्पत्ति का नाश होने से उसे अत्यन्त कष्ट होने लगा। जिन धूर्त चापलूसों के कुसंग में पड़कर उसने धन गँवाया था, अब वे मीठी-मीठी बातों की जगह उसको फटकार देने लगे।

जब खाना मिलने में भी तंगी आने लगी तब उसकी स्त्री ने कहा - 'स्वामिन्! कुछ मेहनत मैं करती हूँ, कुछ मेहनत आप करें, तो निर्वाह हो सकता है।' स्त्री ने सूत कातने, आटा पीसने तथा धान कूटने आदि की मेहनत-मजदूरी शुरु कर दी और उसका पति (सेठ का पुत्र) जंगल में घास तथा लकड़ी काटने जाने लगा। घटनाचक्र में पड़कर इस दम्पती को ऐसा मोटा काम करने पर बाध्य होना पड़ा जो कभी किया नहीं था। जिन कोमल हाथों में फूलों की पंखुडी चुभा करती थी तथा सेमल की रुई के गद्दे कड़े मालूम पड़ते थे, उन हाथों से ऐसा कठिन काम करने के कारण सेठ के लड़के के हाथ-पाँव में कांटे चुभ जाते और छाले पड़ जाया करते थे। इस कष्ट से एक दिन वह एकान्त स्थान पाकर विलाप करने लगा।

उस दिन पास बहने वाली उस जंगल की नदी के किनारे 'कर्मदेवता' और 'लक्ष्मी' दोनों विचार रहे थे। सेठ के लड़के का रोना सुनकर लक्ष्मी बोली- देखो! मेरे बिना जीव का ऐसा हाल होता है। जैसे -

तानीन्द्रियाण्यविकलानि तदेव नाम, सा बुद्धिरप्रतिहता वचनं तदेव।
अर्थोष्मणा विरहितः पुरुषः स एव, अन्यः क्षणेन भवतीति विचित्रमेतत्॥

मेरा साथ (सहारा) पाकर पहले यह क्या था और अब मेरे बिना इसकी क्या दशा है ? हाथ-पाँव आदि इन्द्रियाँ, नाम, बुद्धि, बोलचाल पहले जैसी ही है, केवल धन की गरमी के बिना इसकी यह हालत हो गयी है। लक्ष्मी की यह बात सुनकर कर्मदेवता ने कहा- मेरे बिना इसकी यह गति हुई है -

ब्रह्मा येन कुलालवन्नियमितो ब्रह्माण्डभाण्डोदरे।
विष्णुर्येन दशावतारगहने क्षिप्तो महासंकटे॥
रुद्रो येन कपालपाणिपुटके भिक्षाटनं कारितः।
सूर्यो भ्राम्यति नित्यमेव गगने तस्मै नमः कर्मणे॥

सारा संसार कर्म का वशवर्ती होकर दारुयोषित् की तरह नाच रहा है, इत्यादि बहुत कुछ कथनोपकथन से दोनों में विवाद उपस्थित हो गया। कर्म ने कहा - हे लक्ष्मी ! तुम इसको धन देकर धनी करो। यदि

तुम्हारे दिये धन से ये धनी हो गया, तो तुम्हारा कथन सत्य है और जो धन पाकर भी यह ऐसे का ऐसा कोरा ही रहा तो फिर अधिकता मेरी होगी यानि मैं जीतूँगा।

यह निर्णय हो जाने पर लक्ष्मी ने उसके सामने रास्ते में दो हीरे फेंक दिये। सेठ का पुत्र होने के नाते वह हीरों की परख जानता था। हीरों को उठाकर बडे हर्ष से घर को चला। गर्मी का समय था, प्यास लगी। रास्ते में एक छोटी सी नदी थी। झुककर पानी पीने लगा तो हीरे जेब से निकल कर नदी में गिर पड़े। गिरते ही खाद्य सामग्री जानकर मछली ने निगल लिया। घर आकर स्त्री सहित पश्चात्ताप करने लगा। उस रोज हीरे मिलने की खुशी में बोझभरी तैयार गठरी वह वहीं जंगल के रास्ते में पटक आया था।

अगले दिन सेठ तनय फिर नित्य की तरह जंगल में लकड़ी काटने पहुँचा। उसकी दीन-दशा देखकर लक्ष्मी जी ने एक सच्चे मोतियों की माला उसके रास्ते के बीच में रख दी। उसने माला उठाकर अपनी पगड़ी में रख ली। रास्ते में आने वाली नदी में स्नान हेतु वह ठहरा, माला सहित पगड़ी किनारे पर रख दी। चील खाने की वस्तु समझकर माला को पगड़ी सहित लेकर उड़ गयी। आज भी सेठ पुत्र खाली हाथों घर जाकर पत्नी के साथ शोक करने लगा।

तीसरे दिन सेठ पुत्र फिर रोज की तरह लकड़ी काटने जंगल में पहुँचा तो लक्ष्मी ने रास्ते में सोने के सिक्कों की थैली फेंक दी। उसे सेठ के पुत्र ने उठा ली। आज सेठ सीधा घर की तरफ चला। दो दिन धोखा खाने के कारण बीच में कहीं नहीं ठहरा। घर में पहुँचने पर देखा कि स्त्री घर पर नहीं थी। किसी पड़ोसी के यहाँ गयी थी। उसने घर के प्रधान दरवाजे के पास थैली रख दी और अपनी स्त्री को बुलाने चला गया। इतने में उसकी स्त्री से मिलने पड़ौस की एक महिला आयी। उसने दरवाजा खोला तो रास्ते के पास एक थैली देखी। धीरे से थैली उठाकर पडोसिन अपने घर ले गयी। बाद में सेठ पुत्र और उसकी स्त्री ने आकर थैली न देख बड़ा अफसोस किया।

चौथे दिन फिर सेठ का लड़का जंगल में आकर घास काटने लगा। उसकी यह दशा देख लक्ष्मी जी ने कर्मदेवता से कहा कि "मैं तो सब कुछ दे चुकी हूँ। बार-बार दिया, फिर भी यह कोरा ही रहा। अब आप कुछ देकर देखिये।" यह सुन कर्मदेवता ने सेठ के पुत्र को तांबे के दो टके दिये यानि उसके रास्ते में दो पैसे फेंक दिये। सेठ ने टके उठाये और कहा कि "आज भगवान् ने हमको टका दिया है टका ही सही। हमारा किसी पर कर्ज तो चाहिये नहीं। इससे पहले बहुत कुछ तो दिया पर लक्ष्मी क्या करे जब कर्म ही सहायक नहीं है।" सेठ ने टके को लेकर घर जाते हुए देखा कि रास्ते में एक आदमी नदी से मछली पकड़ रहा है। उसने एक पैसे की मछली खरीदी। दूसरा पैसा मसाले और तेल के लिये रख लिया। फिर सोचा कि लकडी यहीं से चुनता चलूँ। वहीं एक वृक्ष पर सूखी डाली थीं। उसे तोडने वृक्ष पर चढ़ा तो वहाँ एक चील का घोंसला नजर आया। उसमें हार सहित अपनी पगड़ी पड़ी देखी। उठाकर बड़ी खुशी से घर आया। स्त्री से ज़रा ज़ोर से बोला - सुलक्षिणि! जो चीज खो गयी थी, वह मिल गयी। यह आवाज़

उस पड़ोसिन ने सुनी, जिसने थैली झटक ली थी। उसने सोचा - इसको थैली का हाल मालूम हो गया। चोर की दाढ़ी में तिनका वाली कहावत के अनुसार वह विचारने लगी कि कहीं यह राजपुरुषों से मेरे घर की तलाशी न करा दे ? इससे अप्रतिष्ठा तो होगी ही साथ ही जेल या जुर्माना भी हो जाये। इत्यादि विचारकर उसने वह थैली धीरे से सेठ के घर में डाल दी। इसके बाद ज्यों ही सेठ घर में गया, देखा कि थैली भी पड़ी है। उधर मछली चीरी गयी तो हीरे उसके पेट से निकले। आनन्द हो गया।

भाव यह है कि मनुष्य के कर्म ही सुख-दु:ख को देने वाले हैं। कर्मानुसार सब सामग्री जुट जाती है। यदि कर्म अच्छे न हो या यों कहे कि कर्म सहायक न हो, तो मिली हुई सामग्री भी नष्ट हो जाती है। यदि रह भी जाये तो अपने किसी काम की नहीं रहती।

कर्मवीरों का कहना ही क्या है? कर्मठों को समुद्र गोष्पदीभूत हो जाता है। वे चाहें तो सुमेरु को फूँक से उड़ा दें।

सब कुछ कर्मानुसार ही होता है । मनुष्य कर्म न करे और इष्टफल की आशा करे तो उसकी भारी भूल है। सुख सब चाहते हैं, किन्तु वह मिलता नहीं है, पुण्यों से और पुण्य सत्यकर्मों से निष्पन्न होते है।

''कर्म प्रधान विश्व करि राखा'' आदि के कथनानुसार कर्म ही सब इष्टसिद्धियों का प्रधान साधन है। किसी मनुष्य को दूसरे के ऐश्वर्य को देखकर ईर्ष्यालु नहीं होना चाहिये।

सब कुछ कर्म की महिमा से सम्पन्न हो सकता है अत: सत्कर्मानुष्ठान करो।

निदेशक

पद्मश्री नारायणदास रामानन्द

दर्शन अध्ययन एवं शोध संस्थान, जयपुर(राज.)